

प्रेस विज्ञप्ति

रिपब्लिक ऑफ़ सूडान के एम्बेसडर ने की जामिया के वाइस-चांसलर और रजिस्ट्रार से शैक्षणिक सहयोग पर चर्चा के लिए मुलाकात; "संकट और युद्ध के समय में शिक्षा की अधिक आवश्यकता होती है" - डॉ. एल्टॉम

नई दिल्ली, 23 मई, 2025

रिपब्लिक ऑफ़ सूडान के एम्बेसडर महामहिम डॉ. मोहम्मद अब्दुल्ला अली एल्टॉम ने दूतावास में काउंसलर श्री मोहम्मद अली फजारी के साथ कल जामिया मिल्लिया इस्लामिया के वाइस-चांसलर प्रोफेसर मजहर आसिफ और रजिस्ट्रार, प्रोफेसर मोहम्मद महताब आलम रिज़वी से विश्वविद्यालय के यासर अराफात हॉल में मुलाकात की और सूडान तथा जामिया मिल्लिया इस्लामिया में उच्च शिक्षा संस्थानों के बीच शैक्षणिक सहयोग और आदान-प्रदान को मजबूत करने के तरीकों पर चर्चा की।

महामहिम के अभिनंदन के बाद जामिया के वाइस-चांसलर और रजिस्ट्रार द्वारा एम्बेसडर और काउंसलर का जामिया में अंतरराष्ट्रीय संबंध की डीन प्रो. उशविंदर कौर पोपली ने सूडानी प्रतिनिधिमंडल का औपचारिक स्वागत किया, जामिया की समृद्ध ऐतिहासिक विरासत का परिचय दिया और विश्वविद्यालय की वर्तमान रैंकिंग तथा उपलब्धियों से अवगत कराया। उन्होंने भारत और सूडान के बीच लंबे समय से चले आ रहे मैत्रीपूर्ण संबंधों, वर्षों से भारत द्वारा की गई मानवीय सहायता और कूटनीतिक प्रयासों पर प्रकाश डाला। कैसे अनुसंधान और शिक्षण के क्षेत्र में सहयोग को बढ़ावा देने का मार्ग प्रशस्त हो सकता है, इस पर चर्चा की। उन्होंने जामिया के अरबी विभाग के अध्यक्ष डॉ. नसीम अख्तर का भी स्वागत किया, जो विचार-विमर्श में शामिल हुए।

महामहिम डॉ. मोहम्मद अब्दुल्ला अली एल्टॉम ने राजधानी में एक केंद्रीय विश्वविद्यालय की अपनी पहली यात्रा पर संतोष व्यक्त करते हुए विश्व शैक्षणिक मानचित्र पर जामिया की अत्यधिक उच्च प्रतिष्ठा के लिए विश्वविद्यालय प्रशासन को बधाई दी। उन्होंने कहा कि सूडान हमेशा अफ्रीका में शिक्षा का एक प्रकाशस्तंभ रहा है डॉ. एल्टॉम ने कहा कि दोनों देशों के पास साझा औपनिवेशिक अनुभव है और दोनों ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन (एनएएम) में भाग लिया है। उन्होंने याद दिलाया कि भारत सूडान की स्वतंत्रता के बाद उसे मान्यता देने वाले पहले देशों में से एक था और विशेष रूप से प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने सूडान का दौरा किया था। महामहिम डॉ. एल्टॉम ने सूडान में चल रहे युद्ध और आंतरिक संघर्ष की स्थिति पर दुख और गहरी पीड़ा व्यक्त की, उन्होंने कहा कि इसके परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में मौतें हुई हैं, बुनियादी ढांचे को नुकसान पहुंचा है और उनके देश में व्यापक तबाही हुई है। इसलिए, आगे आने वाली चुनौतियों का समाधान शिक्षा के माध्यम से ही संभव है, एम्बेसडर ने कहा। उन्होंने कहा कि "संकट और युद्ध के समय में शिक्षा की अधिक आवश्यकता होती है", डॉ. एल्टॉम ने कहा कि वे भारत और सूडान के बीच शैक्षणिक सहयोग को बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने खुशी व्यक्त की कि भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR) द्वारा दी जाने वाली छात्रवृत्ति के कारण बड़ी संख्या में सूडानी छात्र भारत में उच्च शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम हैं।

जामिया की विदेशी छात्र सलाहकार (एफएसए) प्रो. साइमा सईद ने जामिया में विश्व स्तरीय शिक्षण और शोध पर एक विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसने विश्वविद्यालय की उच्च राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय रैंकिंग में

महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने उन संसाधनों पर जोर दिया जो जामिया अपने 31 से अधिक देशों से आने वाले अंतर्राष्ट्रीय छात्रों के विशाल और विविध समुदाय को प्रदान करता है। प्रो. सर्ईद ने चर्चा की कि कैसे एफएसए कार्यालय छात्रों को आवेदन करने से लेकर प्रवेश और छात्रवृत्ति आवेदन पूरा करने तक और फिर जामिया में उनके प्रवास के दौरान मदद करता है। उन्होंने बताया कि कैसे एफएसए कार्यालय नोडल केंद्र के रूप में कार्य करता है, जो वास्तविक प्रमाण पत्र और दस्तावेज़ीकरण सहायता प्रदान करके, अल्पकालिक अंग्रेजी भाषा पाठ्यक्रम आयोजित करके, अभिविन्यास कार्यक्रमों की मेजबानी करके, लड़के और लड़कियों के लिए परिसर में छात्रावास के आवास का प्रबंधन करके और जामिया में उनकी शैक्षणिक यात्रा के दौरान अंतर्राष्ट्रीय छात्रों का मार्गदर्शन करके अंतर्राष्ट्रीय छात्रों को एक नए शैक्षणिक और सांस्कृतिक वातावरण में एडजस्ट होने में सहायता करता है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि जामिया पिछले कुछ वर्षों में विदेशों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक अफ्रीकी छात्रों के लिए पसंदीदा संस्थान बन गया है।

अपने अध्यक्षीय भाषण में जामिया के वाइस-चांसलर प्रोफेसर आसिफ ने कहा कि भारत-सूडान संबंधों की पहचान न केवल ऐतिहासिक मित्रता बल्कि उल्लेखनीय सभ्यतागत और सांस्कृतिक समानता है। इस बात पर जोर देते हुए कि भारत और सूडान के बीच संबंध प्राचीन काल से हैं, उन्होंने कहा, "हम दो सबसे महत्वपूर्ण सभ्यताओं, नील और सिंधु घाटी सभ्यताओं के उत्पाद हैं।" प्रोफेसर आसिफ ने कहा कि एम्बेसडर डॉ. एल्टॉम की उपस्थिति से जामिया सम्मानित महसूस कर रहा है और उन्होंने कहा कि "जेएमआई सिर्फ एक विश्वविद्यालय नहीं है बल्कि यह एक फ़िक्र, एक विचारधारा और एक आंदोलन है।" प्रोफेसर आसिफ ने कहा कि विश्वविद्यालय में अरबी का शानदार विभाग है, जो इसके सबसे पुराने विभागों में से एक है और इसके पास मौलिक और पथ-प्रदर्शक कार्य हैं। प्रोफेसर आसिफ ने प्रतिनिधिमंडल को बताया कि भारत जबरदस्त सांस्कृतिक, धार्मिक और भाषाई विविधता वाला देश है और इसलिए, इसके बहुलवादी चरित्र के कारण सभी लोग देश में घर जैसा महसूस करते हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की कि दोनों पक्ष शीघ्र ही एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर करने की दिशा में काम करेंगे तथा इस्लामी अध्ययन, शरिया, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, कानून और अरबी भाषा के शिक्षण के क्षेत्रों में सहयोग करेंगे।

अपने समापन भाषण में, प्रोफेसर मोहम्मद महताब आलम रिज़वी ने भारत और सूडान के बीच द्विपक्षीय संबंधों पर विस्तार से चर्चा की, तथा इस बात पर प्रकाश डाला कि किस तरह दोनों देशों के बीच राजनीतिक, आर्थिक और व्यापारिक संबंध बहुत दूरगामी हैं। उन्होंने कहा कि यह बैठक और समझौता ज्ञापन के रूप में सहयोग का भविष्य का मार्ग जामिया के विभिन्न विभागों और केंद्रों, विशेष रूप से अरबी विभाग, नेल्सन मंडेला शांति और संघर्ष समाधान केंद्र, एमएमएजे अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन अकादमी और इस्लामी अध्ययन विभाग के बीच अधिक सक्रिय शैक्षणिक आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान करेगा। प्रो. रिज़वी ने सूडान में शांति अभियानों में भारत की महत्वपूर्ण भागीदारी पर जोर दिया। उन्होंने आगे कहा कि इन ऐतिहासिक और राजनीतिक संबंधों को देखते हुए, जामिया को सूडान में उच्च शिक्षा के संस्थानों के साथ सक्रिय रूप से सहयोग करने की उम्मीद है ताकि आपसी हित के इन क्षेत्रों में दीर्घकालिक शैक्षणिक संवाद और सार्थक शोध को आगे बढ़ाया जा सके। प्रो. रिज़वी ने कहा, "इस तरह का शैक्षणिक सहयोग महत्वपूर्ण होगा, खासकर जब प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने बार-बार भारत और अफ्रीकी देशों के बीच संबंधों को मजबूत करने की आवश्यकता पर जोर दिया है।"

बैठक का समापन सूडान गणराज्य के महामहिम एम्बेसडर और दूतावास में काउंसलर को जामिया की यात्रा और जामिया और सूडानी उच्च शिक्षा संस्थानों के बीच भविष्य के शैक्षणिक सहयोग और आदान-प्रदान को विकसित करने में उनकी गहरी रुचि के लिए धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

प्रो. साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी
जामिया मिल्लिया इस्लामिया